सचेतन

2015-16

सचेतन

वार्षिक रिपोर्ट

सचेतन का तीसरा वर्ष पूरा हो चुका है. अनेकों शुभचिंतकों और साथियों के सहयोग से सचेतन अपने निर्धारित लक्ष्यों की ओर निरंतर अग्रसर है. आमतौर पर स्वैच्छिक संस्थाओं के समक्ष सदैव ही संसाधनों को जुटाने और उनकी निरंतरता बनाये रखने की चुनौति बनी रहती है, विशेषकर वे संस्थाएं जो खालिस तौर पर व्यक्तिगत दान-दाताओं के सहयोग पर निर्भर करती हैं और सीधे तौर पर सबके प्रति ही जवाबदेह होती हैं. उपलब्ध कराये जा रहे संसाधनों के साथ न केवल ईमानदारी और न्यायपूर्ण उपयोगिता बरतनी आवश्यक होती है, वरन उसका पारदर्शिता के साथ प्रदर्शन की कसौटी पर भी खरा उतरने की जद्दोजहद बनी रहती है. संस्था के संदर्भ में यह एक संतोषप्रद बात रही है कि सोचे गए लक्ष्यों की पूर्ति के लिए गतिविधियों को गुणवत्तापूर्ण रूप में करने के लिए सचेतन को निरंतर सहयोग मिला. कभी आर्थिक तो कभी सामग्री के तौर पर. हॉं, सीमित संसाधनों की हद में काम करना मुश्किल तो होता है. प्रभाव का दायरा अवश्य ही सीमित रहा, पर गुणवत्ता और संकल्प के साथ कोई समझौता नहीं किया गया और साथियों के उत्साह में भी कमी नहीं आई.

इस वर्ष के सफ़र में नये साथियों के जुड़ाव के साथ-साथ कुछ अन्य सम-विचार संस्थाओं/संस्थानों जैसे; सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित राजकीय बालिका गृह एवं नारी निकेतन, नान्ता; बाल कल्याण समिति कोटा, कोटा हेरिटेज सोसायटी, महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय कोटा, संगिनी (जैन सोशल ग्रुप) क्लब, नेरोलेक पेंट्स बावल आदि के साथ भी संस्थागत स्तर पर रिश्ते जुड़े जिससे संस्था को नवीन ऊर्जा और बल मिला.

किशोरी बालिकाओं के साथ उनके सशक्तिकरण की दिशा में संस्था के मूल कार्यक्रम 'सेल्फ' के तहत इस वर्ष कौशल संवर्धन पर विशेष आग्रह रहा. संस्था द्वारा राजकीय अपचारी बालिका गृह और नारी निकेतन, नान्ता की किशोरी आवासिनियों को सेल्फ कार्यक्रम के तहत दिए जा रहे कौशल संवर्धन सहयोग को स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से नारीशाला में संस्था द्वारा **'कलाजीविका'** नाम से क्राफ्ट केंद्र की स्थापना एक ऐसा ठोस कदम है जो बालिकाओं को उनके आजीविका उन्मुख हुनर को निखारने में मददगार साबित होगा. पर्यावरण संरक्षण के लिए प्लास्टिक वेस्ट के प्रति जागरूकता बनाने के लिए संस्था अपनी आर्टलैब्स के तहत रचनात्मक माध्यम से निरंतर कार्यरत है. इन आर्टलैब्स कार्यशालाओं के माध्यम से विभिन्न आयु व परिवेश के बच्चों को प्लास्टिक वेस्ट के प्रति जागरूक किया जा चुका है. शहर के विविध स्कूलों व अन्य ज़रूरत वाले इलाकों में कार्य करने की दृष्टि से कुछ क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है व उनमें कार्य योजना की प्रक्रिया भी चालू है. इस संदर्भ में अनेक वालंटियर्स, दानदाताओं और विविध कौशल वाले साथियों की ज़रूरत पड़ेगी, जिनकी पहचान चालू है. आशा है जब पथ प्रदर्शित है, साथी लोग साथ हैं, कारवां भी आकार ले रहा है...तो मंजिल दूर कैसे रह सकती है. अपने बीते साल की कारगुजारियों को लेकर ये वार्षिक रिपोर्ट आप सबकी जानकारी और प्रतिक्रियाओं के लिए प्रस्तुत है.

शुभ पठन !

टीम सचेतन

सचेतन : परिचय

'सचेतन' (सोसायटी फॉर रिसर्च, एजूकेशन एंड ट्रेनिंग) राजस्थान संस्था पंजीकरण अधिनियम 1958 के तहत पंजीकृत कोटा (राजस्थान) स्थित एक स्वयंसेवी एवं अलाभकारी संस्था है. 'सचेतन' के मायने हैं - चेतना युक्त, सतर्कता के साथ, सोचा-समझ कर, जागरूकता के साथ, जीवंत आदि. इस प्रकार स्वयंसेवी संस्था के रूप में 'सचेतन' का उदय कुछ साथियों का सोचा-समझा जागरूक निर्णय है जो अपने ज्ञान और कौशल; दक्षता और सामर्थ्य; समाज की विसंगतियों और वंचित वर्ग के प्रति चिंता और देखभाल का स्थायी स्वप्न रखते हैं. सचेतन का संकल्प बच्चों, किशोरी बालिकाओं, युवाओं एवं महिलाओं के साथ उनके सशक्तिकरण पर कार्य करना है चाहे वे शहर की कच्ची बस्तियों में रहते हों या ग्रामीण क्षेत्र में; चाहे वे स्कूल जाते हों या शिक्षा से वंचित हों; चाहे वे परिवार में रह रहे हों या विषम परिस्थितियों के चलते परिवार छूट गया हो; जीवन की विभीषिकाओं से जूझ रहे हों या फिर समर्थ हों. जाति, वर्ग और निवास से परे वंचित वर्ग विशेषकर बच्चे एवं किशोरी बालिकाओं के साथ कार्य कर उनको बेहतर भविष्य के लिए तैयार करना ही सचेतन का खास मकसद है.

मुख्य कार्यक्रम व गतिविधियाँ

- पर्यावरण संरक्षण में रचनात्मक भागीदारी हेतु ***आर्टलैब***
- किशोरी बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु ***सेल्फ कार्यक्रम***
- कौशल प्रशिक्षण हेतु ***कलाजीविका क्राफ्ट सेंटर***
- सांझे उद्देश्यों पर रचनात्मक जुड़ाव हेतु साथी संस्थाओं के साथ ***सहभागिता***

सचेतन का स्वप्न एक ऐसे समतामूलक और सामाजिक चेतनाभावी समाज की संकल्पना है जिसमें हर मौजूदा सदस्य और आने वाली पीढ़ी स्वस्थ मन, तन और अंतरात्मा के साथ शिक्षित और समर्थवान होगी. सचेतन का आग्रह बाल, किशोर और युवा मन को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि वे अपने आगामी जीवन में विषमताओं के मध्य ऐसे चेतन एवं सतर्क निर्णय ले सकें जो उनको सशक्त करे. सचेतन अनेक परखी हुई एकीकृत विधाओं के द्वारा समाज के विभिन्न वर्ग को प्रभावित करते हुए समाज में नवीन परिवर्तन को प्रेरित करने का प्रयासरत है. संस्था जागरूकता संवर्धन हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना; बच्चों एवं किशोरवर्ग हेतु पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, जीवन कौशल आदि मुद्दों पर प्रशिक्षण, कौशल निर्माण एवं परामर्श प्रदान करना; विभिन्न क्षमतावर्धन कार्यक्रमों को लागू करना इत्यादि कार्य करती है.

आर्टलैब

आर्टलैब के माध्यम से सचेतन बच्चों के कलात्मक हुनर को प्रोत्साहित करते हुए पर्यावरण संरक्षण और 'कबाड़ से जुगाड़' हेतु जागरूकता प्रेरित कर रहा है. आर्टलैब की हमारी अवधारणा में निरंतर विस्तार होता जा रहा है. नित नए अनुभवों और सुझावों के आधार पर आर्टलैब का दायरा बढ़ता जा रहा है. इस वर्ष आर्टलैब के तहत विभिन्न प्रकार के कचरे पर आधारित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया.

विविध विषयों पर आधारित आर्टलैब

- प्लास्टिक बोतलों के कचरे पर आधारित आर्टलैब
- प्लास्टिक पन्नियों पर आधारित आर्टलैब
- कपड़ों की कतरनों पर आधारित आर्टलैब
- बीजों से ज्वेलरी निर्माण

1. प्लास्टिक बोतलों के कचरे से निपटने में बच्चों की भूमिका

पर्यावरण संरक्षण सचेतन के उद्देश्यों में एक प्रमुख उद्देश्य है और यह एक विस्तृत मुद्दा है. सचेतन इसके एक पक्ष ***प्लास्टिक कचरे से उत्पन्न समस्या*** की तरफ लोगों, विशेषकर बच्चों का, ध्यान आकर्षण करने व इससे निपटने में बच्चों की रचनात्मक भूमिका का पुरजोर पक्ष रखता है. प्लास्टिक वेस्ट यानि प्लास्टिक की पन्नियाँ, कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलें, मिनरल वाटर की बोतलें, डिस्पोजल गिलास, चम्मच इत्यादि....ये कुछ ऐसा कचरा है जो सामान्यता घर, स्कूल, होटल, रेस्टोरेंट इत्यादि से काफी मात्रा में निकलता है और जिसके बारे में ये स्थापित हो चुका है कि ये स्वतः नष्ट होने वाला कचरा अर्थात बायो डिग्रेडेबल नहीं है. अतः रीसायकल ही इसका एक उपाय है. जिसके लिए शहर में व्यवस्थित रीसायकल इकाइयों की आवश्यकता होती है. रीसायकल के साथ परिवार और व्यक्तिगत स्तर पर 'refuse-reduce-reuse' व्यवहारों को भी अपनाने की आवश्यकता होती है. पर इन सबमें बच्चे अपना योगदान कैसे कर सकते हैं इसके लिए संस्था ने 'REDECORATE' का विचार रखा अर्थात

प्लास्टिक कचरे के साथ बच्चे रचनात्मक प्रयोग करें और प्लास्टिक उत्पाद को बेकार या काम में न आने की स्थिति में उसे फेंकने के स्थान पर कलात्मक- उपयोगी वस्तु में बदल दें. एक दृष्टि से कहें तो, कचरे को घर में रोक लें. अपनी आर्टलैब के ज़रिये संस्था शहर के विभिन्न स्कूलों, बस्तियों, अपार्टमेंट्स, बच्चों के समूहों में कार्य कर रही है.

प्लास्टिक वेस्ट आधारित आर्टलैब आयोजन क्षेत्र	संभागी	संदर्भ व्यक्ति	सहयोगी
14-15 मई 2015, महालक्ष्मी एन्क्लेव- बारां रोड	24	भारती, सुनीता लीना	सुप्रिया दुबे
21-22 मई 2015, बालिका गृह- नान्ता	31	भारती, सुनीता	पॉलिटेक्निक छात्राएं
5-6 जून 2015, पार्श्वनाथ कॉलोनी, बोरखेड़ा	13	भारती	अमृता, छविप्रिया
8-9 अक्टूबर 2015, घोड़ेवाले बाबा बस्ती,	27	भारती, सुनीता	पीयूष
13- 17 जनवरी 2016, सचेतन वालंटियर्स	7	भारती शीनू चौहान	मनीष, पीयूष
23-25 जनवरी, स्कूल आर्ट प्रदर्शनी- कला दीर्घा	150	भारती शीनू	लीना,सुनीता,पीयूष

इस बार हम विविध क्षेत्रों के लगभग 250 बच्चों तक अपना सन्देश पहुँचाने में समर्थ हो सके. इस बार आर्टलैब अधिकांशतः अपार्टमेंट्स में जाकर वहां के बच्चों के साथ की गयी, जिनमें अंत तक उनके परिजन भी जुड़ जाते और कुछ-न-कुछ बनाने लगते. बालिका गृह की बालिकाओं के साथ की गयी आर्टलैब में महिला पॉलिटेक्निक , कोटा की छात्राओं द्वारा सहभागिता सहयोग प्रदान किया गया व उन्होंने बालिकाओं के साथ विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में सहयोग दिया. बालिकाओं द्वारा वेस्ट प्लास्टिक बोतलों से निर्मित सामग्री को बाल कल्याण समिति के सदास्यों द्वारा अवलोकन किया गया व बालिकाओं को प्रोत्साहित भी किया गया.

साथ ही इस वर्ष संस्था द्वारा जनवरी में कोटा हेरिटेज सोसायटी के साथ सहभागिता निभाते हुए स्कूल आर्ट प्रदर्शनी में आर्टलैब का आयोजन किया जिसमे विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया और बेकार प्लास्टिक बोतलों के उपयोगी रूपांतरण के विविध प्रकियाओं को सीखा.

आर्टलैब की विविध कार्यशालाएं

स्कूल आर्ट प्रदर्शनी में भाग लेते स्कूली बच्चे

प्रदर्शनी अवलोकन

बालिका गृह में आयोजित आर्टलैब

घोड़ेवाले बाबा बस्ती में आयोजित आर्टलैब

महालक्ष्मी एन्क्लेव में आयोजित आर्टलैब

पार्श्वनाथ कॉलोनी में आयोजित आर्टलैब

आर्टलैब में बेकार प्लास्टिक बोतलों से बच्चों द्वारा बनाये गए सजावटी सामान

2. प्राकृतिक वस्तुओं से ज्वेलरी निर्माण, पेपरमेशी कार्यशाला

'खुद करें और खुद सीखें' कार्यशालाओं की श्रृंखला में तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संदर्भ व्यक्ति राम जी द्वारा विविध समूहों के साथ विभिन्न विषयों पर सृजनात्मक कार्यशालाओं को आयोजित किया गया. जिनका विवरण निम्नवत है;

क्रम सं	संभागी समूह/संस्था	आर्टलैब विषय	दिनांक	संभागी संख्या
1	राजकीय बालिका गृह	• ज्वेलरी निर्माण • पेपरमेशी	1 सितम्बर 4 सितम्बर	18
2	आर्टन्स आर्ट एकेडेमी	• ज्वेलरी निर्माण • पेपरमेशी	2 सितम्बर 5 सितम्बर	22
3	ओपन ग्रुप (बजरंग नगर क्षेत्र की महिलाएं)	• ज्वेलरी निर्माण • एंटीसेप्टिक क्रीम एवं साबुन बनाना	3 सितम्बर 4 सितम्बर	19

इन समस्त कार्यशालाओं में रामजी द्वारा अपने आसपास मौजूद प्राकृतिक चीज़ों को उपयोग में लेते हुए विविध कलात्मक, एवं उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना सिखाया गया. उपरोक्त सभी चीजों को बनाने की प्रक्रिया में परम्परागत विधियों को काम में लेना, मशीनों को प्रयोग नहीं करना, पूर्णतया जैविक पद्धति को अपनाते हुए कार्य किया गया. कागज की टोकरियां, बीजों के मोती बनाकर गहने बनाना, मुल्तानी मिट्टी, नीम आदि से साबुन बनाना...सभी कार्यों के दौरान संभागियों ने अपने अनुभव बांटे, नैसर्गिक वस्तुओं की तुलना में बाजार के उत्पादों पर निर्भरता आदि मुद्दों पर विचार विमर्श भी किया गया. इन समस्त कार्यशालाओं में बालिका गृह की बालिकाओं, आर्टन्स आर्ट अकादमी के विद्यार्थियों, और ओपन ग्रुप में विविध महिलाओं द्वारा भाग लिया गया.

रामजी के साथ कार्यशालाओं की कुछ झलकियां

3. कपड़ों के कतरनों/ कचरा प्लास्टिक थैलियों पर आधारित आर्टलैब

कचरा विभिन्न प्रकार का हो सकता है. कपड़ों की कतरनों के कचरे का अपने आप में एक बाजार है. पर जो कतरनों के बाजार के साथ नहीं जुड़ सकते हैं और जहाँ कपड़ों का कचरा निकलता रहता हो तो उस का प्रबंधन कैसे हो. इसका एक तरीका यह हो सकता है कि उनको भी अप-साइकिल कर दिया जाये. इसी विचार के साथ बालिका गृह की बालिकाओं के साथ मिलकर कुछ प्रयोग किये गए और उन्होंने अपने हुनर को कपड़े की कतरनों और प्लास्टिक थैलियों के रूपांतरण में काम में लिया. कपड़ों की कतरनों और प्लास्टिक की बेकार पड़ी थैलियों से उन्होंने विभिन्न आसन, कोस्टर सेट, आदि अन्य सामान बनाये. इस काम के दौरान उन्होंने क्रोशिये और सिलाई मशीनों को काम में लिया. ये एक नया सा काम लगा जिसमें बालिका गृह की अनेक बालिकाओं ने क्रोशिया चलाना सीख लिया.

कतरनों से प्रयोग करती बालिका गृह की बालिकाएं

सेल्फ कार्यक्रम: किशोरी बालिका सशक्तिकरण

'सचेतन' संस्था किशोरी बालिकाओं, महिलाओं के साथ 'सेल्फ' (SELF) अर्थात आत्म/ स्वयं को समझने (Exploring), स्व-नेतृत्व (Leading) और स्व-देखभाल (Fostering) की संकल्पना की रणनीति पर काम करती है. सचेतन की 'सेल्फ' विधा विशेषकर बालिका गृह अथवा आपात स्थितियों में ज़रूरतमंद बालिकाओं के संबलन हेतु है जिसमें शिक्षा, जीवन कौशल, कला और हुनर संवर्धन, स्वास्थ्य, आजीविका, कानूनी साक्षरता, आत्मरक्षा, आदि

विषयों पर क्षमतावर्धन से लेकर जीवन के प्रति सकारात्मक सोच को पल्लवित करने, तनाव को सँभालने की दृष्टि से रचनात्मक प्रक्रियाओं का समावेश है. सचेतन नान्ता स्थित बालिका गृह कोटा के साथ निरंतर सहयोग करने की दृष्टि से नवाचारी गतिविधियों का आयोजन कर बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु कार्य कर रही है. इस वर्ष आयोजित गतिविधियों का ब्यौरा निम्नवत है-

1. ओपन स्कूल शिक्षा से जोड़ना- बालिका गृह में रह रहीं बालिकाएं जो अपनी शिक्षा निरंतर रखने की इच्छुक हैं उनको राजस्थान ओपन स्कूल शिक्षा कार्यक्रम से जोड़कर दसवीं की परीक्षा हेतु तैयार किया गया है. 2014-15 में नामांकित 5 बालिकाओं में से 2 बालिकाओं द्वारा, अप्रैल 2016 में आयोजित, दसवीं की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की गयी. इस वर्ष 2015-16 में 5 बालिकाओं द्वारा दसवीं की परीक्षा हेतु आवेदन किया गया है. इन बालिकाओं के अध्ययन शुल्क को विभाग द्वारा वहन किया गया है व साथ ही शिक्षक सहजकर्ता का तीन माह का मानदेय भी विभाग द्वारा प्रदान किया गया है. शिक्षक सहजकर्ता की समीक्षा, बालिकाओं का मूल्यांकन और परामर्श, आदि का कार्य संस्था प्रतिनिधि द्वारा किया जाता रहा है. शिक्षण सामग्री, कॉपी-पेन, प्रैक्टिकल फाइल, बैग, सहायक पुस्तकें आदि संस्था द्वारा

दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करके रानी (परिवर्तित नाम) बालिका गृह से अपने घर के लिए मुक्त हो कर चली गयी है और आज वह अपने गाँव के एक निजी स्कूल में बच्चों को पढ़ाने में अपना योगदान दे रही है.

हालांकि, नामांकित होने वाली बालिकाओं और उत्तीर्ण होने वाली बालिकाओं की संख्या में अंतर है परन्तु उत्तीर्ण होने वाली बालिकाओं के उदाहरण से प्रेरित हो कर, दुबारा पढ़ने और औपचारिक परीक्षा प्रणाली से गुजरने की मेहनत करने की ललक उल्लेखनीय है. और, यही उद्देश्य भी है कि वे अध्ययन से जुड़ें. उनके लिए यह अपने समय का सदुपयोग जैसा है.

उपलब्ध करना सुनिश्चित किया गया. समय समय पर विषय विशेषज्ञों से भी छात्राओं की भेंट करायी गयी व विषय सम्बन्धी कठिनाइयों को हल किया गया.

2. **कौशल प्रशिक्षण** - शिक्षा के साथ-साथ बालिकाओं का कौशल संवर्धन भी संस्था के सरोकारों में से एक है. इस वर्ष भी संस्था द्वारा बालिकाओं के रचनात्मक कौशल संवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनका विवरण इस प्रकार है-

   i. **लहंगा सिलाई प्रशिक्षण:** 18 मई से 4 जून और 2-15 जुलाई में, दो चरणों में, लहंगा सिलाई प्रशिक्षण आयोजित किये गए जिसमें 19 बालिकाओं द्वारा भाग लिया गया. इस कार्यक्रम के दो उद्देश्य थे- एक तो यह कि लहंगा सिलने के

विविध तरीकों को जानना और दूसरा यह कि पुरानी साड़ियों से लहंगा सिलना सीखना और बनाना. बालिकाओं ने विभिन्न प्रकार की साड़ियों पर लहंगा सिलने का अभ्यास किया और उनको सुंदर बॉर्डर्स और लेस इत्यादि से सजाने का काम भी किया. प्रशिक्षण तो सीमित अवधि में समाप्त हो गया परन्तु उनके द्वारा अर्जित कौशल से वे आज शिशु गृह के बच्चों के लिए, मंदिरों के देवियों की मूर्तियों के लिए, व गृह के कर्मचारियों के लिए भी लहंगे सिलने लगी हैं. प्रशिक्षण के दौरान सिले लहंगों को उन्हीं बालिकाओं को दे दिया गया. बालिकाओं द्वारा सिले लहंगों का राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के कमर्शियल आर्ट विभाग की छात्राओं द्वारा फोटो शूट किया गया व सुंदर कैटलाग प्रस्तुत किया गया. इस प्रक्रिया के दौरान छात्राओं व बालिका गृह की बालिकाओं द्वारा आपस में भेंट की गयी, उनके बनाये लहंगों की विभाग द्वारा प्रशंसा से उन्हें संबल मिला

व अपने कार्य के लिए प्रेरणा भी प्राप्त हुई. लहंगा प्रशिक्षण हेतु सभी संसाधन संस्था द्वारा उपलब्ध कराये गए थे व प्रशिक्षण पूर्णतया निशुल्क था. संदर्भ व्यक्ति के तौर पर सचेतन सदस्यों सुनीता जैन व लीना विजय द्वारा प्रशिक्षण दिया गया.

ii. **एप्लीक/पैच वर्क कार्यशाला-** 24 जुलाई से 11 अगस्त तक पंद्रह दिवसीय एप्लीक वर्क हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 16 बालिकाओं द्वारा भाग लिया गया. कार्यशाला में एप्लीक की विभिन्न विधाओं को बालिकाओं ने सीखा व टेबल कवर व मैट्स बनाये गए. इन सभी कार्यों में पुराने कपड़ों और कतरनों का ही प्रयोग किया गया.

iii. **फैब्रिक पेंटिंग कार्यशाला-** 18- 23 अगस्त की अवधि में छह दिन की फैब्रिक पेंटिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 21 बालिकाओं ने भाग लिया. इस कार्यशाला में कपड़े पर पेंटिंग की विधा को सीखा, जैसे आलू के ठप्पे बना कर रंगीन छापे लगाना, स्टेंसिल बना कर रंग करना व पेंट ब्रश की सहयता से रंगीन नमूने बनाना आदि. कार्यशाला में डॉ. शीनू चौहान ने बालिकाओं का मार्गदर्शन किया और सरल तरीके से पेंटिंग की तकनीक सिखाई.

कार्यशाला के दौरान बालिकाओं ने रुमाल, चादरों और टेबल मैट्स इत्यादि तैयार किये.

iv. **वीविंग और निटिंग कार्यशाला-** इन तमाम प्रशिक्षणों/कार्यशालाओं के दौरान बालिकाओं के साथ अपनी रुचियों को पहचानने और उन्हें समझने के अभ्यास भी दिए जाते थे व चर्चाएँ की जाती थी, ताकि वे स्वयं की रुचि, क्षमता और योग्यताओं का आकलन कर सकें व उसमे निखार ला सकें. इसी क्रम में बालिकाओं ने बुनाई सीखने की बात रखी. कुछ सलाइयां वहां मौजूद थीं व कुछ हमने उपलब्ध करा दीं. उद्देश्य था कि बालिकाएं बुनाई (knitting) की बेसिक बातें समझ जाएँ. इतनी मात्रा में ऊन उपलब्ध करा पाना हमारे लिए भी कठिन था. इसके विकल्प के तौर पर पुरानी साड़ियों से बुनाई का काम शुरू किया. गृह में दो बालिकाओं को ही बुनाई करना आता था. इस काम के साथ लगभग 16 बालिकाएं इस काम को सीख सकीं व बुनाई की कला के साथ उन्होंने पुरानी साड़ियों के आसन और पैरदान बनाना शुरू किया. बालिका गृह में यह एक ऐसा दौर था जब हर बालिका अपने खाली समय में कहीं बैठी आसन बनाती दिखती थी. बुनाई के साथ ही उन्हें हाथ की वीविंग को भी सिखाया गया जिसकी मदद से उन्होंने आकार में थोड़े बड़े आसन बनाये. पुराने पलंग और साइकिल के पहिये को वीविंग के लिए फ्रेम बनाकर वैकल्पिक करघे (लूम) तैयार किये, ताना-बाना कसा और पुरानी साड़ियों और कपड़ों की कतरनों से अनेक खूबसूरत आसन तैयार हो गए. क्रोशिये से बने आसन, जूट के आसन, पुराने बोरों

पलंग के फ्रेम और साइकिल के पहिये से लूम तैयार करके वीविंग का काम शुरू किया.

से बनाये गए आसन, कलियों-सितारे वाले आसन .....और भी तरह-तरह के आसन बनाये गए.

v. **फैब्रिक फोल्डर निर्माण-** 2-6 जनवरी में फैब्रिक फोल्डर बनाने की कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें नयी 6 बालिकाओं को फोल्डर बनाना सिखाया गया. इन बालिकाओं को 'लीड लरनर्स' के रूप में रखा गया जिन्होंने आपनी टीम बनायीं और अन्य बालिकाओं को इस बारे में प्रशिक्षित किया. इन फ़ोल्डर्स हेतु समस्त सामग्री संस्था द्वारा बंदोबस्त की गयी. फोल्डर निर्माण का कार्य अब नारीशाला में नियमित तौर पर किया जा रहा है, जो कि कार्यशालाओं व कांफ्रेंस इत्यादि हेतु क्रय भी किये जा सकते हैं. जिला विधिक सेवा प्रधिक्करण, कोटा द्वारा इन फ़ोल्डर्स की खरीद से बालिकाओं का मनोबल बढ़ा है.

3. **स्वास्थ्य मुद्दों पर जानकारी**: छुट-पुट तौर पर तो कई बार बालिका गृह की बालिकाओं के साथ उनकी सेहत, विशेषकर पीरियड्स को लेकर कई बार बात-चीत होती रहती थी. माहवारी और उसके प्रबंधन को लेकर अक्टूबर -नवम्बर 2015 में संस्था द्वारा एक लघु अध्ययन[1] किया गया जिसमें नारीशाला के स्टाफ और बालिकाओं समेत 61

संभागियों से प्रश्नावली आधारित व्यवस्थित साक्षात्कार किया गया. उसी दौरान ऐसा

[1] Menstrual Hygiene Management: Status Report based on study of Narishala (Nanta) Kota. 2015-16

महसूस हुआ कि माहवारी को लेकर उनकी वर्तमान समझ वास्तविकता से बहुत दूर है. शायद ही कभी इस विषय को ज़रूरी मान कर उनके साथ कभी उनसे किसी ने चर्चा की होगी. ऐसा सोचते हुए हमने संतोष जी, हमारी संदर्भ व्यक्ति जो कि ग्रामीण परिवेश की किशोरी बालिकाओं के साथ स्वास्थ्य चर्चा करने में दक्षता रखतीं हैं, के साथ मिलकर कार्यशाला का आयोजन किया. 11 जनवरी को आयोजित इस कार्यशाला में 21 बालिकाओं ने खुल कर अपने अनुभव सामने रखे और अपनी समझ में नवीन जानकारियों के साथ इज़ाफा किया. शरीर में प्रजनन अंगों की भूमिका, माहवारी चक्र प्रक्रिया, आपस में माहवारी के सम्बन्ध में बात करने के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्दावली, सम्बंधित सामाजिक प्रतिबंध और अपेक्षाएं, परिवार के पुरुषों की भूमिकाएं माहवारी प्रबंधन, किशोरी स्वास्थ्य हेतु आहार इत्यादि विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई. इन चर्चाओं के लिए बॉडी मैपिंग विधा और विभिन्न सामग्रियों (आईईसी मटेरियल) का प्रयोग करते हुए बालिकाओं के साथ तादाम्य बनाते हुए चर्चा को आगे बढ़ाया गया. ये कार्यशाला तो महज़ एक शुरुआत भर थी, अभी तो इस नवीन जानकारी के साथ लम्बे समय तक उनके साथ सार्थक संवाद रखने की आवश्यकता है.

4. **संवाद कार्यक्रम:** बालिका गृह की बालिकाओं के हुनर को समाज में प्रदर्शित करने व उनके समक्ष शिक्षा के विविध मंचों, जानकारी, और अवसरों को सामने लाने के लिए संस्था ने इस वर्ष भी बालिकाओं हेतु विभिन्न संगोष्ठियां एवं भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किये, जिका विवरण निम्नवत है. इन कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें आत्म-विश्वास बढ़ा और अपने रचनात्मक कौशल को आकलन करने का अवसर भी मिला.

   i. ***संगिनी जैन सोशल ग्रुप*** के सदस्यों के साथ भेंट- संगिनी पदाधिकारियों के निवेदन पर 30 जून को श्रीमती रितु बोहरा (सचिव-संगिनी) के नेतृत्व में संगिनी सदस्यों द्वारा बालिका गृह की बालिकाओं के साथ भेंट को संयोजित किया गया. संस्था के साथ परामर्श उपरांत संगिनी सदस्यों द्वारा बालिकाओं के लिए क्राफ्ट

सम्बन्धी आवश्यक वस्तुओं व दो वाइट बोर्ड्स को भेंट किया गया जो कि बालिका गृह में उपलब्ध हैं व बालिकाओं द्वारा काम में लिए जा रहे हैं. संगिनी के इस सहयोग से क्राफ्ट सम्बन्धी कार्य में सुविधा प्राप्त हुई है.

ii. ***महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज प्रदर्शनी अवलोकन***- 20 जुलाई को बालिका गृह की 11 बालिकाओं को राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, कोटा की वार्षिक प्रदर्शनी के अवलोकन हेतु भ्रमण को आयोजित किया गया. जिन बालिकाओं द्वारा संस्था के सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था उन्हें इस प्रदर्शनी में जाने का अवसर दिया गया. प्रदर्शनी में उन्होंने टेक्सटाइल विभाग, कमर्शियल आर्ट और इंटीरियर डिज़ाइन विभाग की प्रदर्शनी देखने और उनकी छात्राओं व शिक्षकों से बातचीत करने का मौका मिला. सम्पूर्ण प्रदर्शनी को फैकल्टी कृष्णा जी एवं विभा जी द्वारा समझाया गया. इस प्रदर्शनी में बालिकाओं को ले जाने का उद्देश्य यही था कि वे हाथ से बने सामानों के विभिन्न आईडिया अपनी नज़र से देख सकें, समझ सकें और जानकारी ले सकें. साथ ही जो बालिकाएं पढ़ने की इच्छुक हैं, उन्हें यह पता चल सके कि दसवीं के बाद पॉलिटेक्निक शिक्षा संस्थान ऐसा संस्थान है जहाँ वे अपने हुनर के बारे में शिक्षा ले कर उसे और परिष्कृत कर सकती हैं. इस प्रदर्शनी के परिणाम स्वरुप कॉलेज के साथ बालिकाओं के लिए भविष्य में सार्थक सहभागिता के बारे में भी बात हो सकी.

iii. ***सचेतन सदस्यों के साथ भेंटवार्ता*** कार्यक्रम- 15 अगस्त को संस्था की महिला सदस्यों एवं मित्रों ने बालिका गृह की बालिकाओं के साथ भेंट की. सदस्यों ने छोटे समूहों में बंटकर बालिकाओं से उनके स्वप्नों, आकांक्षाओं, और संस्था के साथ गतिविधियों के बारे में बातचीत की. बालिकाओं द्वारा संस्था के सहयोग से किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया व बनाये गए क्राफ्ट सामानों को भी प्रदर्शित किया. इस अवसर पर संस्था मित्र श्री राजेश एवं आशा शर्मा, सिलवासा-गुजरात द्वारा बालिकाओं के लिए भेजे गए कुर्तों को भी पुरस्कार स्वरुप वितरित किया गया. साथ ही दो बालिकाओं (मुन्नी व रानी -नाम परिवर्तित) को क्रिएटिव बालिकाओं के रूप में पुरस्कृत भी किया गया.

iv. ***अल्फा स्कूल सोसाइटी***, केबल नगर, कोटा से निदेशक डेनिअल और एना चेरियन और यूके से आये उनके मित्र दंपत्ति डेव और हेदर ने बालिका गृह की बालिकाओं, महिलाओं व बच्चों के साथ 27 दिसम्बर को भेंट की. क्रिसमस के अवसर पर इस भेंट में बच्चों के साथ बातचीत की व हेदर ने बालिकाओं को ऊन और स्ट्रा पाइप से ब्रेसलेट बनाना सिखाया व गुब्बारों से विभिन्न आकृतियाँ बना कर बच्चों को बांटी. सीखने- सिखाने की इस प्रक्रिया में न

तो भाषा की कोई अड़चन थी न ही समझ की. हांलांकि एना अनुवादक का काम कर रहीं थी पर एक सीमा के बाद लगा कि इसकी आवश्यकता नहीं है. हेदर जहाँ तक हो प्रदर्शन कर के बता रहीं थी व बच्चे बीच-बीच में उनके दवारा बोले जा रहे अंग्रेजी शब्दों को अपनी समझ में बेहतर फोलो कर पा रहे थे. ये भेंट महज

क्रिसमस के उपहारों को बांटने की नहीं थी, इसमें हुनर का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण था.

सहभागिता

1. **पांच दिवसीय कार्यक्रम 'जीवन राग' का आयोजन :** सचेतन संस्था व नारी निकेतन कोटा के संयुक्त तत्वाधान में महिला दिवस के उपलक्ष में दिनांक 7 मार्च से 11 मार्च 2016 तक पांच दिवसीय कार्यक्रम 'जीवन राग' का आयोजन नान्ता स्थित नारी निकेतन परिसर में किया गया. बालिकाओं के लिए इस दौरान प्रतिदिन विविध गतिविधियों जैसे

खेल-कूद, भजन- संगीत, फूल रंगोली, ड्रामा वर्कशॉप का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में विभिन्न संदर्भ व्यक्तियों जैसे अंजु शर्मा, नर्बदा, शालिनी भद्रा एवं शिखा ने बालिकाओं के लिए कार्यशाला आयोजित की. कार्यक्रम के समापन समारोह में विभिन्न गतिविधियों में विजेता रही बालिकाओं को पुरस्कार वितरण किया गया. मुख्य अतिथि श्रीमती जयाकँवर गुंजल द्वारा इस अवसर पर सचेतन संस्था द्वारा शुरू किये गए **कलाजीविका – आर्ट एवं क्राफ्ट सेंटर** का विधिवत उद्घाटन भी किया गया. बालिकाओं ने इस अवसर पर केंद्र में सीखी चीज़ों की हस्तकला प्रदर्शनी भी लगायी. संस्था द्वारा केंद्र में सीख रही बालिकाओं को क्राफ्ट-किट भी प्रदान किये गये ताकि यहाँ से जाने के बाद भी संसाधनों के साथ वे अपने हुनर को निखार सकें और आवश्यकता पड़ने पर सम्मान पूर्ण आजीविका अवसर जुटा सकें.

2. कोटा हेरिटेज सोसायटी के साथ स्कूल आर्ट प्रदर्शनी में सहभागिता: संस्था द्वारा जनवरी में कोटा हेरिटेज सोसायटी के साथ सहभागिता निभाते हुए 23-25 जनवरी में तीन दिवसीय स्कूल आर्ट प्रदर्शनी में आर्टलैब का आयोजन किया जिसमे विभिन्न

स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया और बेकार प्लास्टिक बोतलों के उपयोगी रूपांतरण की विविध प्रकियाओं को सीखा. कार्यक्रम के अंतिम दिन बच्चों द्वारा बनाये गए उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी जिसे विभिन्न स्कूलों से आये बच्चों और शिक्षकों व अन्य आगंतुकों ने देखा और सराहा. इस प्रदर्शनी की तैयारी के लिए 13-17 जनवरी में सचेतन वालंटियर्स ने सिखाने व डेमो हेतु कुछ उत्पादों जैसे लैंप, झाड़ू, पेपर स्टैंड आदि को तैयार किया था जिसमें मुख्य रूप से डॉ. शीनू चौहान, डॉ. मनीष गौड़, राजेश विजय, सुनीता जैन, पियूष और भारती ने अपना

सहयोग दिया था. इस गतिविधि ने लोगों को प्लास्टिक वेस्ट के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद की व साथ ही एक रचनात्मक अवसर देने में भी सफल रही कि कैसे कचरे से रोजमर्रा काम में आने वाली चीजों को बनाया जा सकता है.

3. अन्य गतिविधियां:

I. घोड़ेवाले बाबा कच्ची बस्ती की किशोरी बालिकाओं के साथ स्थानीय रैन बसेरा में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें बालिकाओं ने अपनी बस्ती के बारे में, अपनी दिनचर्या, और बस्ती के लोगों

के बारे में अपनी राय रखी. संस्था भविष्य में इन बालिकाओं के साथ कार्य करने की योजना रखती है.

II. रामदास नगर स्टेशन क्षेत्र की कच्ची बस्ती का संस्था मित्र श्रीमती सीमा चौधरी व भारती गौड़ द्वारा अवलोकन किया गया ताकि वहां किशोरी बालिकाओं के साथ कार्य करने की संभावनाओं पर विचार किया जा सके.

III. नारीशाला में संस्था द्वारा कलाजीविका क्राफ्ट सेण्टर की स्थापना की गयी ताकि बालिकाएं निश्चित समय पर अपने रोजाना के कामों से निवृत होकर कुछ रचनात्मक कार्य में समय व्यतीत कर सकें व कोई हुनर सीख सकें.

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व हेतु सहयोग

कंसाई नेरोलेक पेंट्स लिमिटेड, बावल के सीएसआर के तहत स्थानीय राजकीय विद्यालय, सुथाना के बच्चों के लिए संस्था द्वारा 28-29 मार्च में दो दिवसीय 'खुद कर के सीखें' शिविर का आयोजन किया गया. नेरोलेक सीएसआर के साथ संस्था के रचनात्मक सहयोग का यह दूसरा वर्ष था. इस शिविर के तहत मूलतः उन गतिविधियों को शामिल किया गया था जो कि कहीं न कहीं पर्यावरण संरक्षण, मूल्य शिक्षा, प्रकृति के प्रति जुड़ाव, परंपरागत हस्तकला के प्रति संवेदनशीलता को लक्षित करने वाली थीं. शिविर में कपड़ों पर पैंटिंग के परंपरागत और आधुनिक तरीके जैसे आलू के ठप्पों और लकड़ी के ठप्पों से ब्लॉक पैंटिंग, फैब्रिक पैंटिंग आदि के बारे में जानकारी दी गयी. बच्चों ने ब्लाक पैंटिंग का प्रयोग करते हुए स्वयं के लिए टी-शर्ट पर पैंटिंग की. साथ ही चादरों, तकियों के कवर आदि पर भी लकड़ी के ठप्पों से पैंटिंग करना बताया गया. इसके साथ ही बीजों से ज्वेलरी बनाना व पेपरमशी विधा से कलात्मक वस्तुएं बनाना सिखाया गया. शिविर में जिला अधिकारी महोदय, रेवारी; जिला एवं

ब्लाक शिक्षा अधिकारी, नेरोलेक प्रतिनिधि व स्थानीय समुदाय के लोगों ने अवलोकन किया व संस्था के प्रयासों व बच्चों द्वारा बनाये उत्पादों को सराहा.

<u>कंसाई नेरोलेक पेंट्स लिमिटेड, बावल सीएसआर हेतु शिविर की कुछ झलकियां</u>

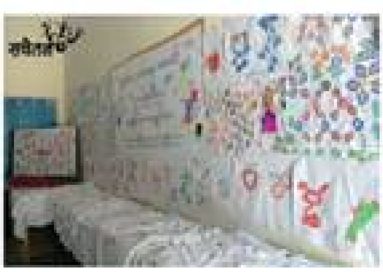

डॉक्यूमेंटेशन एवं विविध सामग्री विकास

इस वर्ष अपने कार्यों पर आधारित निम्न रिपोर्ट्स एवं लेखों को संस्था द्वारा तैयार किया गया है-

- वार्षिक रिपोर्ट 2014-15
- वेबसाइट www.sachetansociety.org का नियमित अपडेशन
- फेसबुक पेज निर्माण एवं संधारण
- माहवारी स्वास्थ्य प्रबंधन: नारीशाला बालिकाओं के अनुभवों पर आधारित अध्ययन
- 'हुनर': बालिकाओं द्वारा निर्मित लहंगों का फोटोग्राफिक डॉक्यूमेंटेशन

सचेतन सदस्य (वर्ष 2015-16)

इस वर्ष संस्था के सदस्यों का विवरण निम्नवत है. संस्था सदस्यों द्वारा संस्था की निर्धारित कार्यकारिणी बैठकों व आमसभा बैठकों में भाग लिया गया व संस्था के विभिन्न कार्यक्रमों में अपना मार्गदर्शन व सहयोग प्रदान किय गया.

संस्था सदस्य

प्रभाकर शर्मा (अध्यक्ष)
भारती गौड़ (सचिव)
लीना विजय (कोषाध्यक्ष)
सुनीता जैन (सदस्य)
मंजू सोनी (सदस्य)
शरद चौधरी (सदस्य)
अमृता बिस्वास(सदस्य)
रेनू सक्सेना (सदस्य)
विकास डागुर(सदस्य)
अमिताव बासु (सदस्य)
अरविन्द सिंह (सदस्य)

संस्था आमसभा बैठक :

- 9 अप्रैल 2015
- 18 अक्टूबर 2015 (विशेष बैठक)

संस्था कार्यकारिणी बैठकें:

1 अगस्त 2015
1 सितम्बर 2015
25 फ़रवरी 2016

इन बैठकों की कार्यवाही का विधिवत दस्तावेजीकरण किया जाता है.

सचेतन साथी

संस्था सदस्यों के अतिरिक्त संस्था के उद्देश्यों की पूर्ती में समय-समय पर विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा वित्तीय, सामग्री एवं मौकों पर मौजूद रहकर अपना सहयोग प्रदान किया गया है, जिन्हें संस्था-साथी कहा गया है. इस वर्ष के संस्था-साथियों की सहयोग वार सूची निम्नवत है-

वित्तीय सहयोग

बी.बी.सक्सेना, बंगलोर	इंदिरा गौड़, कोटा
सपना अग्रवाल, कोटा	विमलेश सोनी, कोटा
नमता जेठवानी, कोटा	संध्या भाम कोटा
राधिका, कोटा	विक्टोरिया सिंह, कोटा
संगिनी-जैन सोशल ग्रुप, कोटा	तनु जैन,
वर्ल्ड लर्निंग इंडिया, दिल्ली	बरखा पारस जैन
डॉ. शीनू चौहान, कोटा	मीता शर्मा, जयपुर

विभिन्न कार्यक्रमों में वालंटियर एवं सामग्री सहयोग

पीयूष अग्रवाल (छात्र एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता), वंदना श्रीमाली (समाज सेविका, कोटा), आरव यादव (कोटा सिटी ब्लॉग), महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज कोटा की छात्राएं- शैली जैन, डॉ. शीनू चौहान (शिक्षिका बंसल पब्लिक स्कूल), सुप्रिया दुबे (व्याख्याता राजकीय महाविद्यालय,कोटा), छविप्रिया (सोफ़िया स्कूल, कोटा), पलाश वर्मा (डिजाइनिंग स्टूडेंट), सुनीता जैन एवं लीना विजय संस्था सदस्य, सीमा चौधरी, कोटा.

संस्था को सहयोग करें

आप अपनी सहयोग राशि बैंक चेक के माध्यम से हमारे संस्था कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा सीधे ही बैंक ट्रांसफर कर सकते हैं. समस्त डोनेशन आयकर अधिनियम 1961, सेक्शन 80 जी के तहत छूट प्राप्त हैं. समस्त चेक **'Sachetan Society for Research, Education and Training'** के नाम पर बनाये जायेंगे.

कार्यालय पता: सचेतन, 23- श्रीपद, रेलवे सोसायटी कॉलोनी, बजरंग नगर, कोटा (राजस्थान), भारत. पिनकोड 324001.

नेट बैंकिंग हेतु बैंक विवरण:

बैंक का नाम- स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
सिटी शाखा: कोटा (राजस्थान)
बैंक शाखा: एडीबी शाखा
बैंक खाता संख्या: 32852896009
IFSC/RTGS कोड: SBIN 0001838
बैंक पता : स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, एडीबी ब्रांच, स्टेशन रोड, कोटा (राजस्थान), भारत.

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.sachetansociety.org. व फेसबुक पेज को देख सकते हैं.

संस्था वित्तीय रिपोर्ट 2015-16

SACHETAN SOCIETY FOR RESEARCH EDUCATION AND TRAINING

23, SHREEPAD RAILWAY SOCIETY COLONY, BAJRANG NAGAR, KOTA

RECEIPTS & PAYMENT A/C FOR THE YEAR ENDED ON 31-3-2016

PARTICULARS		AMOUNT	PARTICULARS		AMOUNT
Cash balance	3,599.00		Printing & Stationary		2,388.00
Bank Balance	1,27,882.00	1,31,481.00	Bank Cahrges		702.00
Other Receipts		1,800.00	Website Maintenance Charges		7,350.00
Membership Fees		4,000.00	Annual Exhibition Exp		8,907.00
Donation Received		1,48,577.00	Sewing Machine		20,200.00
			LCD Projector		30,477.00
			Skill Development Project Exp		
			Material	8041	
			Travel	14800	
			Resource Persons	500	23,341.00
			Art Labs project Exp		
			Travel	14,565.00	
			Material	17,269.00	
			Resource Persons	45,900.00	77,734.00
			Open School Study project exp		
			Material	330.00	
			Travelling Expenses	1,132.00	
			Resource Person	3,430.00	4,892.00
			Cash Balance	6,014.00	
			Bank Balance	1,03,853.00	1,09,867.00
	Total Rs.	2,85,858.00		**Total Rs.**	2,85,858.00

As per our report of even date annexed

For: M/s SACHETAN Society for Research Education and Training

For: Jain Neeraj & Co.
Chartered Accountants

(Prabhakar Sharma) President (Bharti Gaur) Secretary (Leena Vijay) Treasurer

(Ritu Bohra) Partner

Place: Kota
Date: 23-07-2016

SACHETAN SOCIETY FOR RESEARCH EDUCATION AND TRAINING

23, SHREEPAD RAILWAY SOCIETY COLONY, BAJRANG NAGAR, KOTA

INCOME & EXPENDITURE A/C FOR THE YEAR ENDED ON 31-3-2016

PARTICULARS		AMOUNT	PARTICULARS	AMOUNT
To Printing & Stationary Exp		2,388.00	By Donations Received	1,48,577.00
To Bank Charges		702.00	By Membership Fees	4,000.00
To Audit & Legal fees		5,650.00	By Other Receipt	1,800.00
To Website Maintenance Charges		7,350.00		
To Annual Exhibition Exp		8,907.00		
TO Skill Development Project Exp				
-Material	8041			
-Travel	14800			
-Resource Persons	500	23,341.00		
To Art Labs project Exp				
-Travel	14,565.00			
-Material	17,269.00			
-Resource Persons	45,900.00	77,734.00		
To Open School Study project exp				
- Material	330.00			
- Travelling Expenses	1,132.00			
- Resource Person	3,430.00	4,892.00		
To Excess of Income over Exp.		23,413.00		
	Total Rs.	**1,54,377.00**	**Total Rs.**	**1,54,377.00**

As per our report of even date annexed

For: M/s SACHETAN Society for Research Education and Training

For: Jain Neeraj & Co.

Chartered Accountants

Place: Kota

Date: 23-07-2016

(Prabhakar Sharma) President *(Bharti Gaur) Secretary* *(Leena Vijay) Treasurer*

(Ritu Bohra) Partner

M. No. 79509 KOTA

SACHETAN SOCIETY FOR RESEARCH EDUCATION AND TRAINING

23, SHREEPAD RAILWAY SOCIETY COLONY, BAJRANG NAGAR, KOTA

BALANCE SHEET AS ON 31-3-2016

LIABILITIES		AMOUNT	ASSETS	AMOUNT
Corpus Fund			Equipment	54,627.00
Opening Balance		70,000.00	State Bank of India Bank A/c	1,03,853.00
General Fund:			Cash in hand	6,014.00
Opening Balance	65431.00			
Add: Excess of income over Exp	23413.00	88,844.00		
M/s Jain Neeraj and Company		3,450.00		
Sh. Neeraj Jain		2,200.00		
	Total Rs.	**1,64,494.00**	**Total Rs.**	**1,64,494.00**

As per our report of even date annexed

For: M/s SACHETAN Society for Research Education and Training

For: Jain Neeraj & Co.

Chartered Accountants

Place: Kota

Date: 23-07-2016

(Prabhakar Sharma) President *(Bharti Gaur) Secretary* *(Leena Vijay) Treasurer*

(Ritu Bohra) Partner

M. No. 79509 KOTA

सचेतन

(शोध शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था)

23, रेलवे सोसाइटी कॉलोनी, बजरंग नगर, कोटा, राजस्थान

sachentsociety.org

facebook.com/sachetansociety

sachetansociety@gmail.com